Date

प्रश्न:- रचना-विधान की दृष्टि से 'असाध्य वीणा' का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:- अज्ञेय कृत 'असाध्य वीणा' उनके काव्य संकलन 'आंगन के पार द्वार' में संकलित एक लंबी कविता है। यह एक चिनी लोककथा पर आधारित रचना है जिसका भारतीयकरण अज्ञेय जी ने कर दिया है। असाध्य वीणा कथ्य और शिल्प, अनुभूति की गंभीरता तथा अभिव्यक्ति की प्रांजलता की दृष्टि से इस संग्रह की सर्वश्रेष्ठ कविता है।

यह जापानी लोककथा पर आधारित आख्यान काव्य है। इसमें कथा है पात्र है, नायक की तरह अनेक दृश्य हैं। वस्तु विधान की दृष्टि से यह सुनियोजित कथा काव्य है। पाठक का कौतूहल इसमें अंत तक बना रहता है। पात्रों विशेषत: वज्रकीर्ति, प्रियंवद, राजा और रानी के चरित्र तथा व्यक्तित्व के संबंध में स्पष्ट संकेत है। इसमें वज्रकीर्ति की घोर तपस्या का संकेत है प्रकृति के मनोरम दृश्य है - वस्तु परिवर्तन के समय, प्रात:, दोपहर, संध्या, रात्रि के समय प्रकृति का परिवर्तन वेश विन्यास की बड़ी सूक्ष्म-दृष्टि तथा विवरणात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है —

" काली कौंध पत्तियों पर वर्षा-बूंदों की पट-पट
घनी रात में महुए का चुपचाप टपकना।
चौंके खग-शावक की चिहुंक
शिलाओं के ढुलकते वन-झरनों के,
द्रुत लहरीले जल का कल-निनाद।"

असाध्य वीणा की एक विशेषता यह है कि कवि ने इसमें विविध भावों की अभिव्यक्ति बड़ी सफलता तथा पात्र की मनोदशा के अनुरूप की है। आरंभ में कवि की निराश तथा खिन्न मनोदशा का चित्रण है बाद में

तल्लीन, आत्मविस्मृत पूरी तरह सत्य तथा कला के प्रति समर्पित एकाग्रचित से ध्यान में लीन प्रियंवद के भावों को चित्रित किया गया है :—

"ओ तरु तात! संभाल मुझे
मेरी हर किलक
पुलक में डूब जाय
मैं सुनूं
सुनूं
विस्मय में भर आंकू
तेरे अनुभव का एक-एक अंत: स्वर
तेरे दोलत की लोरी पर झूमूं मैं तन्मय।"

आत्मविस्मृत प्रियंवद के मनोभावों में रहस्यवाद की झलक मिलती है। जब वह विराट सत्ता के प्रति आस्था, श्रद्धा और गहन प्रकृति भाव का निवेदन करता है—

"पर कुछ को मैं भूला गया हूँ
सुनता हूँ मैं
पर मैं तुझसे परे, शब्द में लयिमान"

काव्य शिल्प व भाषा शैली की दृष्टि से भी यह कविता प्रयोगवादी काव्य की श्रेष्ठ कविताओं में से एक है कवि पहले ही घोषणा कर चुका था कि "उपमान मैले हो गए हैं तथा प्रतीकों के देवता कूच कर गए हैं।" इस कविता में प्रयुक्त अप्रस्तुत योजना नई, मोहक, प्रभावशाली तथा संप्रेषण की दृष्टि से सफल है। कवि ने प्राचीन उपमानों के साथ-साथ नवीन उपमानों का भी प्रयोग किया है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा व्यतिरेक तथा अन्योक्ति नामक अलंकारों का प्रयोग करने पर यह स्पष्ट हो जाता है। परम्परागत अलंकारों के साथ-साथ कवि ने पाश्चम के अलंकारों मानवीकरण (Personification) तथा ध्वन्यार्थ व्यंजना का भी प्रयोग किया है।

Date

उपमा - कारे - भुरुवों - की डालें

उत्प्रेक्षा - जब तारों की तरल कंपकंपी स्पर्शहीन झरती है।
मानो नभ में तरल नयन ठिठकी।

मानवीकरण - कितनी बरसातों ने कितने खद्योतों ने
आरती उतारी।

ध्वन्यार्थ व्यंजना - रेतीले कगार का गिरना छप-छड़ाप
थरथराहट चढ़ती बहिया की।
पेड़ों का अररा कर टूट-टूट कर गिरना।